ੴ १ओंकार सतिगुर प्रसादि ।।

पातिशाही १० ।।

त्व प्रसादि ।। स्वैये ।।

दीनिन की प्रतिपाल करै नित संत उबार गनीमन गारै ।।
पछ्छ पसू नग नाग नराधप सरब समै सभ को प्रतिपारै ।।
पोखत है जल मै थल मै पल मै कल के नहीं करम बिचारै ।।
दीन दइआल दइआ निधि दोखन देखत है पर देत न हारै ।।१।।२४३।।
दाहत है दुख दोखन कौ दल दुज्जन के पल मै दल डारै ।।
खंड अखंड प्रचंड पहारन पूरन प्रेम की प्रीत संभारै ।।
पार न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ।।
रोजी ही राज बिलोकत राजक रोख रूहान की रोजी न टारै ।।२।।२४४।।
कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविख्ख भवान बनाए ।।
देव अदेव खपे अहंमेव न भेव लखिओ भ्रम सिओ भरमाए ।।
बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ।।
पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन स्त्री पदमापति पाए ।।३।।२४५।।
आदि अनंत अगाध अद्वैख सु भूत भविख्ख भवान अभै है ।।
अंति बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्द्र अछै है ।।
लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभ वै है ।।
दीन दइआल दइआ कर स्त्रीपति सुंदर स्त्री पदमापति ए है ।।४।।२४६।।
काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ।।
देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ।।
जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ।।
काहे को डोलत है तुमरी सुध सुंदर स्त्री पदमापति लैहै ।।५।।२४७।।
रोगन ते अर सोगन ते जल जोगन ते बहु भांति बचावै ।।
सत्त्र अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै ।।
राखत है अपनो कर दै कर पाप संबूह न भेटन पावै ।।
और की बात कहा कह तो सौ सु पेट ही के पट बीच बचावै ।।६।।२४८।।
जछ्छ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही कर धिआवै ।।
भूमि अकास पताल रसातल जछ्छ भुजंग सभै सिर निआवै ।।
पाइ सकै नही पार प्रभाहू को नेत ही नेतह बेद बतावै ।।
खोज थके सभ ही खुजीआसुर हार परे हरि हाथ न आवै ।।७।।२४९।।

नारद से चतुरानन से रुमनारिख से सभ हूं मिलि गाइओ ।।
बेद कतेब न भेद लखिओ सभ हार परे हरि हाथ न आइओ ।।
पाइ सकै नही पार उमापति सिध्ध सनाथ सनंतन धिआइओ ।।
धिआन धरो तिह को मन मैं जिह को अमितोजि सभै जगु छाइओ ।।८।।२५०।।
बेद पुरान कतेब कुरान अभेद न्रिपान सभै पच हारे ।।
भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे ।।
राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संगि तिहारे ।।
आदि अनादि अगाध अभेख अद्वैख जपिओ तिन ही कुल तारे ।।९।।२५१।।
तीरथ कोट कीए इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे ।।
देस फिरिओ कर भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे ।।
आसन कोट करे असटांग धरे बहु निआस करे मुख कारे ।।
दीन दइआल अकाल भजे बिनु अंत को अंत के धाम सिधारे ।।१०।।२५२।।

((((((((((----))))))))))